M. T. B. COLLEGE, SURAT

*Manuscripts Library*

No. Ref. / Ser. 1226

Title: Yejamana Prayoga

1226

complete

C Yajamana Prayoga

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | Title |
| | | | Author |
| | | | Editor |
| SK | | | Year, Vols. |
| | • | | Publisher |
| 1226 | | | Remarks |

भ्याः।। श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं व्रीहिश्यामाकाग्रयणाख्यं तंत्रेणाय क्ष्ये।। तन्मस
ध्य० ॐ तथा।। आग्रयणेष्टिन्तं बांधहविः।। व्रीहिमयःपुरोडाशो द्रव्यं।। व्रीहिमयः
श्चरुः।। श्यामाकश्चरुः पंचप्रेआग्निः।। अग्नीषोमावाज्यभागदेवते।। इंद्राग्नी
विश्वेदेवाः।। सोमः द्यावापृथिवी इति प्रधानदेवताः।। अग्निःस्विष्टइत्यादि
दि० वाचस्पतेब्रह्मणइदंन० देवेभ्य आदित्येभ्यइ० विश्वेभ्योदेवेभ्य० आकुभते
अग्न० आर्द्रैग्न्य० अग्नयेवरुणायदिस्येविश्वेभ्यो देवेभ्य० पूर्णमासाये०
अमावास्याया० इंद्रायेद० देवेभ्य० रुद्रादिभ्य० रउवत्सरादिभ्य० देवेभ्यइं०
यद्धर्मेकपालंसुपाचिनोतिवेधसः।। पूछस्त दार्पेव्रतइंइवायुंपुत्तौ।। विश्वे
भ्योदेवेभ्य० विश्वेषां देवानामहं देवयज्ययाप्राणैःसायुज्यं गमेयं।। छ

सोमायेदंन० सोमस्याहं देवयज्ययाप्रजयाचपशुभिश्चजनिषीय।। द्यावापृथिवी
भ्यामि० द्यावापृथिव्योरहं देवयज्ययोभयोर्लोकयोर्संध्यासं।। ईषायेदं० ऊर्जायेदं०
सहसइ० सहस्यायेदं।। मधवइ० माधवइ० शुक्रायेदं० शुचयइ० प्रजापतयेत्वाग्र
हेंगरहणामिसहोभ्रियेसत्वेयशसेमहेमन्नाद्याय।। भद्रान्नःश्रेयःसमनैष्टदेवास्त्वया
वसेनसमशीमहित्वा।। सनोमयोभूःपितवाविशेहशंन्नोभवद्विं० अमोसिप्राणतद
तंब्रवीम्यमासि सर्वासिं न्नसिप्रविष्टः।। समेजरांरोगमपनुद्यशरीरादमामएधि
मास्मथामइंद्र।। उन्वंवीवत्रः।। अहिन्संतप्रतिगृह्णीध्वं।। विश्वेषां देवानामह
मुज्जितीमनुज्येष।। सोमस्याहं० द्यावापृथि० व्योर० ब्राह्मणांतर्पणांतं सं० दशब्रा
ह्मणभोज्याः।। ।। [struck] व्रीहिश्यामाकाग्रयणाख्यायजमानप्रयोगेति।। छः